

पद ७५

(राग: बागेश्री बहार - ताल: एक्का)

कां तुला स्थूल हैं पहाण्याची चटक लागली। नेति नेतीति श्रुति
वदतां बहु भागली ॥१॥ पहा कीं या पंचभूतां शोधुनी मनिं हैं
जाणा। आत्मसत्ता ही सकल नामरूपीं फांकली ॥२॥ हृदयाकाशीं
उठते त्रिपुटिसहित वासना। विषय साक्षित्व गुणें स्वरूपस्थिति
ही झांकली ॥३॥ ज्ञानमार्ताडकृपें मीपण ग्रंथीं खोला। देहींच
भेटेल निर्विकल्प माउली ॥४॥